धर्मे ते धीयतां बुद्धिः

मनस्ते महदस्तु च

सनातन संवर्धिनी

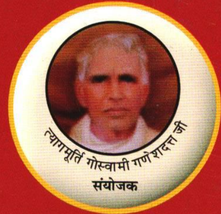

पंचम वर्ष -द्वितीय अंक

दिसम्बर - 2019

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, (पंजी.) नई दिल्ली

(कार्यक्षेत्र: दिल्ली, चण्डीगढ़, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान)
मुख्य कार्यालय: भूपेन्द्र भवन, कृष्णा मार्केट, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, दूरभाष: 011-23586251, 23584016
शाखा कार्यालय-1: सप्तऋषि आश्रम, सप्तसरोवर मार्ग, हरिद्वार, दूरभाष: 01334-261702
शाखा कार्यालय-2: गोस्वामी गणेशदत्त भवन, सैक्टर-19 ए, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़, दूरभाष: 0172-2543283

E-mail: sdprsabha@gmail.com

संपादक मण्डल

संरक्षक

डॉ. शिवकुमार शर्मा

संपादक मण्डल

डॉ. नन्द किशोर शर्मा

डॉ. भारती बन्धु

डॉ. विजय शर्मा

परामर्श मण्डल

श्री इन्द्र मोहन गोस्वामी

श्री उपेन्द्र शर्मा

श्री सरदारी लाल गोस्वामी

डॉ. देश बन्धु

डॉ. आर. पी. विज

श्री जगद्देव सिंह संस्कृत महाविद्यालय, सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार
सांस्कृतिक गतिविधियों की झलकियाँ

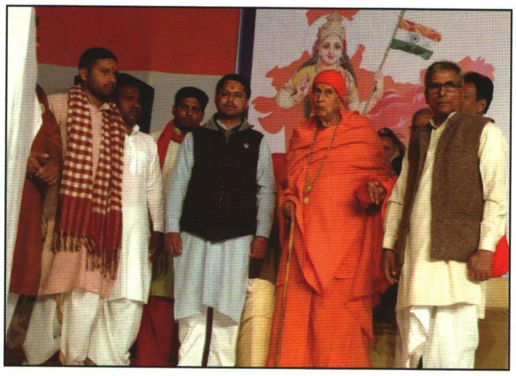

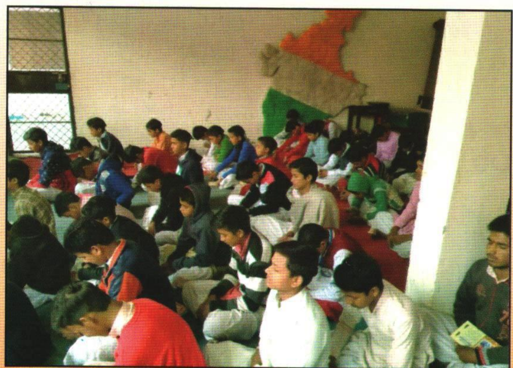

सनातन धर्म : सनातनता एवं वैश्विकता

धर्म सृष्टि का मूलाधार है। संसार का भूत, वर्तमान और भविष्यत् सभी कुछ धर्म से नियंत्रित और संचालित है। धर्म ने ही मानव को सृष्टि के अन्य प्राणियों से विशिष्ट और श्रेष्ठ बनाया है। धर्महीन मानव मानवयोनि में आकर भी पशुतुल्य होता है – 'धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।'

धर्म मानव के लिए देवत्व का सोपान है, मुक्ति का द्वार है। पुरुषार्थ–चतुष्ट्य में धर्म का स्थान सर्वप्रथम है। धर्म को मूलाधार बनाकर संचित किए गए अर्थ से कामनाओं और एषणाओं की पूर्ति द्वारा तृप्ति का अनुभव करता हुआ मानव अन्त में विराग को प्राप्त हो कैवल्य की स्थिति में पहुँचता है। इस प्रकार धर्म लौकिक सुख, स्वर्गिक सुख तथा मुक्तिजन्य परमानन्द का परम साधन है। महर्षि कणाद ने धर्म की परिभाषा में इसी तथ्य को रेखांकित किया है – "यतोऽभ्युदयनिः श्रेयस्सिद्धिः सः धर्मः"

धर्म वास्तव में संसार के निर्बाध विकास और मानव कल्याण के लिए अपरिहार्य रूप से अपेक्षित ऐसे सनातन मूल्यों, आदर्शों, सिद्धान्तों, विधि–निषेधों, परम्पराओं और देश–काल सापेक्ष लौकिक मर्यादाओं आदि की संहिता का नाम है जो सभी कालखण्डों और भूखण्डों में समान रूप से उपादेय है। मनु महाराज ने इस धर्मसंहिता के दस सूत्रों का प्राधान्येन उल्लेख किया है –

"धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधः दशकं धर्मलक्षणम्।।"

धर्म के ये दस सूत्र निस्संदेह लोकमंगल के लिए आवश्यक हैं। लोकमंगल ही धर्म का महान उद्देश्य है। तभी तो मीमांसकों ने लोकमंगल को ही धर्म का पर्याय स्वीकार किया है – 'यः श्रेयस्करः स एव धर्मशब्देनोच्यते'। जैसे किसी राष्ट्र का अस्तित्व और प्रशासनिक संचालन उसके संविधान पर आधृत है वैसे ही इस संसार का अस्तित्व और संचालन धर्मसंहिता पर टिका है। धर्म ने ही समस्त लोकों को धारण कर रखा है – 'धर्मो येन धृता लोका धारणात् धर्म उच्यते'।

श्रुति और स्मृति ग्रंथों में आचार को ही धर्म का उत्कृष्ट रूप कहा गया है – 'आचारः परमो धर्मः।' आचारहीन व्यक्ति को वेद भी पवित्र नहीं करते। आचारवान व्यक्ति ही आचार्य, शिक्षक, उपदेशक, सन्त–साधक, योगी और तपस्वी बनते हैं। उनका चरित्र महान होता है, अनुकरणीय होता है। संसार के इतर जन उनका अनुसरण करते हैं। गीता का यही अभिमत है –

यद् यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः। स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।

महाभारत में यक्ष–युधिष्ठिर संवाद में आचारवान व्यक्ति को 'महाजन' (महापुरुष) कहा गया है तथा उस द्वारा आश्रित और यापित जीवनशैली को धर्म का जीवन्त उदाहरण बताया गया है –

श्रुतयो विभिन्नाः स्मृतयोऽपि भिन्ना नैको मुनि र्यस्य वचः प्रमाणम्। धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः सः पन्थाः।।

धर्म–धारण की प्रक्रिया :–

जैसे प्रत्येक भौतिक पदार्थ अपने धर्म को स्वतः धारण किए रहता है वैसे ही मानव भी धर्म को अपनी प्रकृति में आत्मसात् कर ले। तभी धर्म के धारण की सार्थकता है। जलाना अग्नि का धर्म है, शीतलता जल का धर्म है। ये दोनों धर्म अपने–अपने पदार्थ में अनायास समाहित रहते हैं। ऐसे ही धर्म और धर्म के पोषक तत्त्व व्यक्ति के व्यक्तित्व में अनायास समाहित हों। धर्म व्यक्ति के लिए बोझ नहीं, संस्कार बने, उसके व्यक्तित्व का सहज और अपरिहार्य अंश बने। बोझ को फेंकने में व्यक्ति त्वरा दिखाता है। यदि धर्म बोझ होगा तो मानव उससे अधिक दिनों तक निर्वाह नहीं कर सकता। सिर पर धारण की हुई बोझिल गठड़ी की तरह उसे उठाकर पटकने में ही चैन की सांस लेगा। अतः धर्माचार्यों का दायित्व है कि वे धर्म को बोझिल न होने दें। मूल का उच्छेद किए बिना युगानुरूप धर्मवृक्ष का परिष्कार व संस्कार होता रहे। धर्मानुयायियों का कर्त्तव्य है कि वे धर्म को हृदय के स्पन्दन तथा श्वास–प्रश्वास की निसर्ग गति की तरह अनायास धारण करें। तभी धर्म हमारे जीवन का नियंता होकर हमारे लिए श्रेयस्कर होगा।

विश्व के धर्मों के अभेदक तत्त्व :–

संसार में धर्मों की गिनती कर पाना संभव नहीं है। यदि 'जितने व्यक्ति उतने धर्म' की बात कह दी जाए तो अतिशयोक्ति न होगी क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की निजी पूजा–पद्धति, उपासना–विधि, स्वतंत्र चिन्तन और पृथक्–पृथक् जीवन शैली होती है। आस्तिकों की तो बात ही क्या, नास्तिकों का भी अपना एक प्रमाणित जीवनदर्शन होता है जिसे उनके 'निजी धर्म' की संज्ञा दी जा सकती है। पर इन समस्त पूजा–पद्धतियों, जीवनशैलियों और चिन्तन धाराओं में न्यूनाधिक्य रूप में कुछ ऐसे सनातन आदर्श और जीवन मूल्य विद्यमान रहते हैं जिनके समष्टि रूप को धर्म की संज्ञा दे सकते हैं।

हमारा लक्ष्य धर्म के प्राण तत्त्व को पहचानना है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, बाहरी और आंतरिक शुचिता, संतोष, तप, स्वाध्याय, भगवत्–स्मरण, मधुर, प्रिय और सत्य संभाषण, न्यायनिष्ठा, दानशीलता, त्यागवृत्ति, क्षमादान, परोपकार, दया–करुणा, सेवा–शुश्रूषा, मैत्री, सर्वेषामविरोधेन जीवन–यापन आदि और इन जैसी न जाने कितनी अन्य मानव–मन की सदवृत्तियाँ धर्म के प्राण हैं। कोई भी व्यक्ति उनसे विच्छिन्न नहीं हो सकता, जीवन में उनकी उपेक्षा नहीं कर सकता। वस्तुतः इन सद्वृत्तियों के अभाव में न व्यक्ति चल सकता है और न ही संसार। संसार में वर्तमान में जितने भी धर्म, मत, सम्प्रदाय, पंथ या मज़हब प्रचलित हैं या अतीत के गर्त में समाविष्ट हो गए हैं या भविष्य में जिनका आविर्भाव होना है उन सब का अस्तित्व मानव–मन की इन सद्वृत्तियों पर ही आधृत है।

उपर्युक्त सद्वृत्तियाँ ही धर्म की आत्मा हैं। इन सद्वृत्तियों को व्यवहार में कैसे अपनाया जाए, इन्हें लोकमंगल में कैसे नियोजित किया जाए, स्व के उद्धार के साथ–साथ स्वेतरों का उद्धार कैसे हो ? आदि अनेक प्रश्न धर्म के व्यावहारिक रूप से सम्बद्ध हैं जो मानव–मेधा को प्रत्येक युग में झकझोरते रहे हैं। मानव–मनीषा ने देश और काल की आवश्यकताओं के अनुरूप धर्म के इन नियामक तत्त्वों को अपने–अपने युग और समाज में अपने–अपने ढंग से लागू किया है। इन तत्त्वों को लागू करने का ढंग धर्म का स्थूल कलेवर है। देह की महत्ता तब तक है जब तक उसमें आत्म तत्त्व है। चेतनाहीन देह शव है। यही स्थिति धर्म के स्थूल कलेवर की है। इसमें धर्म के प्राणतत्त्वों का होना परमावश्यक है। जैसे देह से भिन्न होते हुए भी प्राणी चेतना के स्तर पर एक हैं वैसे ही बाहरी दृष्टि से भिन्न–भिन्न स्वरूप व अभिधान वाले धर्मों की मूल चेतना एक है। सभी धर्म लोकमंगल की मधुमयी भावना से अनुप्राणित हैं। अतः धर्मों की बाह्य भेदता में भी आंतरिक अभेदता है। जब–जब धर्म अपने मूल उत्स से पराङ्मुख हो आडम्बरप्रधान हुआ है तब–तब धर्म के सच्चे नियामकों ने आडम्बरों की कड़ी भर्त्सना करते हुए धर्म के आत्म तत्त्व का संस्कार और परिष्कार किया है फिर चाहे वैदिक युग के याज्ञवल्क्य हों या सन्तशिरोमणि कविवर कबीर हों या आधुनिक युग में भारतीय संस्कृति के पुरोधा भारत रत्न महामना पं० मदनमोहन मालवीय जी हों। धर्म का ऐसा परिष्कार और संस्कार भविष्य में भी अपेक्षित रहेगा।

सनातन धर्म की वैश्विकता :

आज विश्व में जो प्रमुख धर्म प्रचलित हैं उनमें हिन्दू धर्म (सनातन धर्म), इसाई धर्म और मुस्लिम धर्म प्रमुख हैं। ये प्रमुख धर्म आगे नाना सम्प्रदायों और उपसम्प्रदायों में बंटे हुए हैं जिनकी गणना करना संभव नहीं है। सामान्यतः बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिक्ख धर्म, आर्यसमाज और सनातन धर्म इन पाँच धर्मों के समवाय को हिन्दू धर्म माना जाता है पर मूल रूप में हिन्दू धर्म सनातन धर्म का ही पर्याय है यतः शेष चार धर्मों का उत्स सनातन धर्म ही है। सिक्ख धर्म पूरी तरह से सनातन परम्परा का अनुगामी है। नाम–स्मरण, संकीर्तन, गुरु–पूजा, ग्रंथ–पूजा आदि दोनों में समान रूप से विद्यमान हैं। सिक्खों के महामहिम दस गुरु सनातन धर्म के भी सिरमौर सन्त हैं। सनातन धर्म के संरक्षण के लिए ही गुरु तेग बहादुर ने अपना बलिदान दिया। वेदों की भाँति परम पावन गुरू ग्रंथ साहिब सनातन–साहित्य की भी श्रीवृद्धि कर रहा है।

इसी प्रकार बौद्ध धर्म और जैन धर्म एक युग विशेष में सनातन धर्म की विकृतियों के विरोध में समय–समय पर आविर्भूत हुए। वास्तव में सनातन धर्म की कर्मकाण्ड पद्धति से ही इनका विरोध रहा है न कि औपनिषदिक परम्परा से। विशिष्ट युग के तथाकथित धार्मिकों ने अपनी कुत्सित वृत्तियों के पोषण के लिए तथा तुच्छ व संकीर्ण स्वार्थों की पूर्ति के लिए कर्मकाण्ड पद्धति का मनमाने ढंग से दुरुपयोग किया और धर्म के मूल में जो विश्वकल्याण की भावना होती है उसकी घोर उपेक्षा की। इसीलिए तत् तत् युग और समाज के प्रबुद्ध धर्माचार्यों ने धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा का विरोध किया, बाह्य आडम्बरों की भर्त्सना की, रूढ़ियों की श्रृंखलाओं में बंधे समाज का परिष्कार किया। यदि ऐसा किया तो अच्छा ही किया। इन्होंने सनातन धर्म के परिष्कार के लिए मीठी गोली न देकर समाज को कुनैन की कड़वी गोली खिलाई। अन्यथा बौद्धों के शून्यवाद और शंकर के अद्वैतवाद में पूर्ण अभेद है। इस नितान्त समता को आधार बना कर कुछ विद्वानों ने तो शंकराचार्य पर 'प्रच्छन्न बौद्ध' होने का आरोप भी लगाया। जैन धर्म का 'स्यादवाद' का सापेक्षिक–सत्य–सिद्धान्त सनातन धर्म की गतिशीलता और लचीलेपन को ही उजागर करता है।

आर्यसमाज तो पूर्णतः वैदिक पद्धति का अनुयायी है। सनातनधर्म से उसकी भेदता का मूलाधार 'ब्रह्म का स्वरूप है। आर्यसमाज ब्रह्म को पूर्णतः और सर्वथा निराकार मानता है। सनातन धर्म भी उस अनन्त सत्ता को पारमार्थिक रूप में निराकार, निर्विषय, निर्द्वन्द, निर्भय आदि स्वीकार करता है पर व्यावहारिक रूप में 'परब्रह्म' धर्म के उत्थान, अधर्म के नाश और लोक–कल्याण के लिए प्रत्येक युग में विशिष्ट अवतारी पुरुष के रूप में इस भू पर अवतरित होते हैं जैसा कि गीता में स्वयं भगवान श्री कृष्ण की स्वीकारोक्ति है –

परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे–युगे।।

वस्तुतः अवतारवाद, मूर्तिपूजा और श्राद्धकर्म को लेकर ही आर्यसमाज और सनातन धर्म में भेदता है। पर अब यह आंशिक भेदता भी धीरे–धीरे विलुप्त हो रही है। आर्यसमाजी बन्धुओं ने सनातन धर्म के उक्त तीन सूत्रों को अपने जीवन में धारण कर लिया है। वे स्वयं महर्षि दयानन्द को परमप्रभु का अवतार मानते हैं, उनकी प्रतिमा को पूजते हैं और पितृ–ऋण से उऋण होने हेतु कुछ एक तो श्राद्ध भी करते हैं। मुस्लिम धर्म और ईसाई धर्म में पाए जाने वाले अनेक लोकमंगलकारी सिद्धान्त और मूल्य सनातन धर्म में भी ज्यों के त्यों सुरक्षित हैं। वास्तव में विश्व के किसी भी धर्म का दूसरे धर्म से विरोध हो ही नहीं सकता जैसाकि महाभारत में व्यास जी का कथन है –

"धर्मं यो बाधते धर्मो न सः धर्मः कुधर्मतः। अविरोधी तु यो धर्मः सः धर्मः मुनिपुंगव।।"

धर्म मानव को विरोध और वैमनस्य नहीं बल्कि मैत्री और सौमनस्य सिखाता है, विषमता के स्थान पर समरसता का पाठ पढ़ाता है और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् **'The whole world is a family'** का राग गाता है। मानवता से विच्छिन्न होकर धर्म कैसे जीवमान रह सकता है। यहाँ मैं उपरोक्त सभी धर्माचार्यों और धर्मावलम्बियों से विनम्र अनुरोध करना चाहता हूँ कि मेरा उद्देश्य किसी धर्म या सम्प्रदाय को तुलनात्मक दृष्टि से गौण या श्रेष्ठ बताना नहीं है बल्कि विश्व के सभी प्रमुख धर्मों में निहित मूल चिरन्तन एवं शाश्वत मूल्यों (जिन्हें वैदिक परम्परा में सनातनी मूल्य अभिहित किया गया है) को उजागर करते हुए इनके गौरवमय प्राचीन इतिहास को रेखांकित करना है। केवल बाह्यरूप की भेदता से आत्मा की अभेदता नहीं मिट सकती। फिर हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई आदि पृथक्–पृथक् नामों से अभिहित नाना धर्मों के लोकमंगलकारी तत्त्वों की अभेदता कैसे मिट सकती है। भारतीय परम्परा में स्वयं आचार्यों में अद्वैतवाद को शैवाद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, शुद्धाद्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद आदि न जाने कितने रूपों में रूपायित किया है। पर इससे जीव और ब्रह्म के पारिमार्थिक ऐक्य पर कोई आँच नहीं आती।

सनातन धर्म की सनातनता :–

सनातन धर्म विश्वव्यापी व युग युग–व्यापी धर्म है। यही विश्व का आदि धर्म है। अतः प्राचीनतम धर्म भी यही है। इस धर्म की प्राचीनता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि यह धर्म किसी अवतारी पुरुष के नाम से सम्बद्ध नहीं है। देवाधिदेव महादेव शिव हैं, गोधामवासी नारायण हैं, शक्तिस्वरूपा भगवती जगदम्बा हैं, मर्यादापुरुषोत्तम भगवान राम हैं, मनोहारी बाल लीलाओं और मोहिनी मुरली से विश्व को मोहने वाले नटखट कृष्ण–कन्हैया हैं, महर्षि बाल्मीकि, वेदव्यास, पाणिनि, पतंजलि, कणाद, गौतम, जैमिनी, वशिष्ठ, भारद्वाज जैसे ऋषि–मुनि तथा कबीर, तुलसी, सूर, मीरा जैसे भक्त कवि हैं। ये सभी समन्वित रूप में सनातन धर्म की अमर वैरागी ध्वजा के संवाहक रहे हैं, सनातन धर्म के सांस्कृतिक रिक्थ हैं पर फिर भी सनातन धर्म इनमें से किसी एक में ही सिमट कर नहीं रह गया है। यही इसकी महनीय विशेषता है कि यह धर्म विशिष्ट व्यक्ति, महापुरुष या अवतार को नहीं बल्कि उनके चिन्तन और सत्कर्म को महत्त्व देता है, अवतारी पुरुष द्वारा स्थापित मूल्यों और मर्यादाओं को महिमा–मण्डित करता है। वस्तुतः सनातन धर्म सत्यान्वीक्षणी और सत्यान्वेषी ऋषि परम्परा का पोषक है।

सनातन शब्द 'सदा' अव्यय से टयुल् (अन) प्रत्यय लगने पर तुट् (त्) का आगम होने पर निष्पन्न हुआ है। इसमें 'सदा अव्यय के 'द' को 'न' हो जाता है। वास्तव में 'सदातन' ही सनातन है। सनातन की सनातनता इसके सतत् प्रवहमान गत्यात्मक स्वरूप में है। भगवती गंगा की पुण्य–पावन जलधारा जैसे गंगोत्री से गंगासागर तक अखण्ड और अविरल रूप से प्रवहमान है वैसे ही सनातन धर्म की अविरल धारा कृतयुग, त्रेता और द्वापर की युग–सरणियों को पार करती हुई इस घोर कलिकाल में भी अखण्ड और अटूट रूप में प्रवहमान है और महाप्रलय तक प्रवाहित रहेगी। इस दृष्टि से यह धर्म जितना प्राचीन है उतना ही अर्वाचीन भी है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि सृष्टि के उन्मेष से लेकर शिव के प्रलयंकर विध्वंस तक तथा दार्शनिक शब्दावली में उस अज्ञात, अनन्त, नाना नाम व रूपधारी परम तत्त्व की आविर्भाव–तिरोभाव आदि जो नाना प्रकार की लीलाभूमियाँ हैं वे सभी सनातन धर्म की भी कर्मस्थली हैं।

शिव सनातन हैं तो धर्म भी सनातन है। शिवविहीन सृष्टि की परिकल्पना नहीं की जा सकती। ऐसे ही सनातन धर्म से विच्छिन्न सृष्टि नहीं हो सकती। ज्योतिष् में प्रत्येक ग्रह की निर्धारित कक्षा होती है जिस पर वह मार्गी और वक्री गतियों से चलता हुआ, उदय और अस्त की स्थितियों को लांघता हुआ तथा उच्च और नीच राशियों को पार करता हुआ एक राशिचक्र पूरा करता है और पुनः मेष से मीन तक के दूसरे–तीसरे राशिचक्र को पूरा करने में जुट जाता है और यह क्रम निरन्तर चलता रहता है। ठीक यही स्थिति संसार की है। इसकी भी एक निर्धारित कक्षा है, निर्बाध पर नियमित गति है। संसार केवल शताब्दियों और सहस्राब्दियों में नहीं सिमटा है। इसकी गति भी सीधी न होकर चक्रीय है। सीधी गति सान्त होती है, इसमें सीमित लक्ष्य रहता है पर चक्रीय गति अनन्त होती है और इसका लक्ष्य भी अनन्त की सायुज्य–प्राप्ति होता है।

यह संसार चतुर्युग (4320000 वर्ष), मन्वन्तर (71 चतुर्युग), और कल्प (14 मन्वन्तर+25920000 संधि कालवर्ष अथवा एक हजार चतुर्युग) की परिक्रमाएँ करता हुआ ब्रह्मा के एक दिन का कालपरिमाण पूरा करता है जो कुल 432 करोड़ वर्ष है। इतने ही वर्षपरिमाण की ब्रह्मा की रात्रि है। इस प्रकार 864 करोड़ वर्ष ब्रह्मा का एक अहोरात्र है। अतः संसार घडी की सूइयों की भाँति एक परिक्रमा के बाद दूसरी परिक्रमा के लिए तैयार हो जाता है। प्रत्येक चतुर्युग, मन्वन्तर और कल्प का इतिहास पुनः उसी रूप में दोहराया जाता है। 'यथापूर्वमकल्पयत्' मंत्रांश में सृष्टि के इसी विकासक्रम को समझाया गया है। इस प्रकार संसार सनातन है, चिरन्तन है और इस सनातन संसार का जो धर्म है, व्यवस्था है, मर्यादा और परम्परा है, आचार संहिता है वही सनातन धर्म है। अतः शिव और संसार की भाँति सनातन धर्म भी सनातन है। प्रलयकाल में संसार की भाँति सनातन धर्म भी शिवतत्त्व में तिरोहित हो जाता है और अगली सृष्टि में संसार के साथ–साथ पुनः आविर्भूत हो जाता है।

– डॉ. नन्द किशोर शर्मा
प्रधान सम्पादक

माता मन्दिर ओखला, नई दिल्ली
प्राण–प्रतिष्ठा एवं मूर्ति–स्थापना

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब रजि० के तत्त्वावधान में नव–निर्मित माता मन्दिर ओखला, नई दिल्ली में सनातन धर्म की शास्त्रीय परम्परा के अनुसार 7 जुलाई 2019 से 11 जुलाई 2019 तक पंचदिवसीय मूर्ति स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया गया। सभा के प्रचार मंत्री, डॉ. नन्द किशोर शर्मा जी के सानिध्य में यह कार्य हरिद्वार से पधारे श्री जगद्देव सिंह संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य, डॉ. राजेन्द्र कुमार गौनियाल जी, ओखला माता मन्दिर के पुजारी श्री विनोद मिश्रा जी एवं योग्य पंडितों द्वारा सम्पन्न किया गया। नव निर्मित मन्दिर में माता की मूर्ति सभा द्वारा, श्री हनुमान की मूर्ति कार्यवाहक प्रधान श्री इन्द्र मोहन गोस्वामी जी द्वारा, श्री राधा कृष्ण की मूर्ति महामंत्री श्री उपेन्द्र शर्मा जी द्वारा, शिवलिंग तथा शिव परिवार कार्यालय मंत्री श्री डी.आर. मदान जी द्वारा, राम दरबार, श्री लक्ष्मी नारायण एवं गौरी शंकर की मूर्ति उप प्रधान श्री रमेश आनन्द जी द्वारा दी गई। श्री आई.एम.गोस्वामी जी, श्री डी.आर. मदान जी द्वारा सपत्नीक एवं श्री रमेश आनन्द जी द्वारा पूजा अर्चना की गई। डॉ. देशबन्धु जी एवं डॉ. भारती बन्धु जी द्वारा मूर्तियों का विशेष श्रृंगार किया गया। इस अवसर पर सभा के पदाधिकारीगण सर्वश्री इन्द्रमोहन गोस्वामी जी, प्रचारमंत्री डॉ. नन्द किशोर जी, कार्यालय मंत्री, श्री डी.आर. मदान जी, संयुक्त मंत्री श्री वीरेन्द्र कत्याल जी एवं सभा के सदस्य श्रीमती लक्ष्मी सिंह जी, श्री नरेन्द्र मोहन बत्रा जी, श्री रिभुकान्त गोस्वामी जी, श्री चन्द्रशेखर गोस्वामी जी, श्री के.एल. मल्होत्रा जी, श्री उमाकान्त शर्मा जी, श्री मुकुल शर्मा जी एवं कार्यालय से श्री अरूण शर्मा, आर.पी.पन्त एवं श्री नरेन्द्र कुमार तथा अन्य सदस्य इसमें उपस्थित थे। मूर्ति प्रतिष्ठा के पश्चात् हवन एवं विशाल भण्डारे का भी आयोजन किया गया।

– डी.आर. मदान
कार्यालय मन्त्री

भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी

भारतरत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी का जन्म उत्तर प्रदेश के प्रयाग में 25 दिसम्बर सन् 1861 को एक साधारण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम पं. ब्रजनाथ जी एवं माता का नाम मूनादेवी जी था। ये लोग मालवा के मूल निवासी थे अस्तु मालवीय कहलाये। पं. मदन मोहन मालवीय जी की प्राथमिक शिक्षा प्रयाग के ही श्री धर्मज्ञानोपदेश पाठशाला में हुई जहाँ पर सनातन धर्म की शिक्षा दी जाती थी। अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण करने में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। माता के कंगन पाठशाला शुल्क के लिए अनेक बार गिरवी रखे गये। सन् 1879 में इन्होंने हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की और बाद में उच्च शिक्षा के लिए म्योर कॉलेज में प्रवेश लिया। कॉलेज के प्रिंसिपल हैरीसन ने इनकी धार्मिक भावना से प्रभावित होकर उन्हें एक छात्रवृत्ति प्रदान की। संस्कृत साहित्य के विद्यार्थी होने के कारण आप कॉलेज के संस्कृत अध्यापक पं. आदित्य राम भट्टाचार्य के सम्पर्क में आये। इनका विवाह 16 वर्ष की अवस्था में इनकी वग्मिता से प्रभावित मिर्जापुर निवासी सनातनी पंडित नन्दला जी की सुपुत्री कुन्दनदेवी से हुआ। आर्थिक विपन्नता के कारण बी.ए. करने के बाद ही मालवीय जी ने एक सरकारी स्कूल में 40/– रू. मासिक वेतन पर अध्यापकी शुरू कर दी।

बालकृष्ण भट्ट द्वारा सम्पादित पत्रिका 'हिन्दी प्रदीप' में आपके लेख समय–समय पर प्रकाशित हुए। 1884 में मदन मोहन मालवीय जी ने हिन्दू मध्यम समाज नाम से प्रयाग में एक सभा स्थापित की जिसमें हिन्दू धर्म और समाज को सुसंगठित करने के अनेक उपायों पर विचार किया गया। 1924 में हिन्दुस्तान टाइम्स का दायित्व मालवीय जी द्वारा सम्भाला गया और इसका हिन्दी संस्करण भी प्रकाशित हुआ। एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण कर कालान्तर में प्रसिद्ध वकील बन गये। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की आवास की समस्या को अनुभव करते हुए आपने हिन्दू विद्यार्थियों के छात्रावास के लिए घूम–घूम कर चन्दा इकट्ठा किया। मालवीय जी ने अपने सामाजिक जीवन सम्बन्धी कार्यों में शिक्षा के व्यापक प्रसार के महत्त्व को समझते हुए सर्व प्रथम वरीयता दी। भारतीय संस्कृति समुचित ज्ञान के साथ–साथ राष्ट्रीय भावना के संचार और चरित्र निर्माण में भी सहायक हो। इसकी पूर्ति उन्होंने अद्वितीय विश्वविद्यालय 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' की स्थापना द्वारा की जहाँ राष्ट्रीयता, देशभक्ति, धर्म, दर्शन, कला को साकार करने के लिए उन्होंने परिवार की मर्यादा के विरूद्ध भीख माँगने में भी संकोच नहीं किया। विश्वविद्यालय भवन के निर्माण के लिए राजा साहिब से धन प्राप्त करने के लिए वे मकर संक्राति के अवसर पर भिखारियों की पंक्ति में खड़े हो गये। निजाम हैदराबाद से हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए आर्थिक सहायता न मिलने पर उसी शहर में धनाढय व्यक्ति की अर्थी पर फैंके गए सिक्कों को इकट्ठा किया तथा बादशाह से रूपयों की जगह जूता तक प्राप्त किया। इनकी इस चारित्रिक उदारता से बादशाह स्वयं लज्जित हुए और ससम्मान प्रभूत धन राशि प्रदान की।

मालवीय जी कई बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। जलियांवाला काण्ड पर मालवीय जी संसद में लगातार तीन दिन तक बोलते रहे। इनके भाषण सुनकर सरकारी अधिकारियों की आँखों में आंसू आ गये।

मालवीय जी कट्टर हिन्दू थे। हिन्दू सिद्धान्तों की उन्हें सजीव मूर्ति कहा जा सकता है। मालवीय जी परिवार से बाहर किसी के हाथ का कच्चा भोजन नहीं करते थे। जगह मिलने पर चौका लगाकर स्वयं खिचड़ी बना लेना उनके लिए सामान्य बात थी। पर ये विचार वे दूसरों पर नहीं लादते थे। वे जब गोलमेज परिषद में लंदन गये तो उनके साथ गंगाजल, मिट्टी और गौ भारत से गयी थी। मालवीय जी ने श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना सन् 1923 में की और गोस्वामी गणेशदत्त जी के हाथों में उसकी बागडोर सौंपी। मालवीय जी का सनातन धर्म के प्रति विशेष लगाव था। उनका कहना था – पृथ्वी मण्डल पर जो वस्तु मुझको सबसे प्यारी है वह धर्म है और वह धर्म, सनातन धर्म है। हिन्दू धर्म के आराध्य – अतिथि, ब्राह्मण और गौ ये तीनों भी उनके आराध्य थे। मालवीय जी हिन्दू धर्म के उपासक होते हुए भी संकीर्णताओं से पूर्णतः मुक्त थे। उनमें देश के विविध धर्मावलंबियों को एकता के सूत्र में बाँध रखने की अद्भुत शक्ति थी। उनके धर्म सम्मेलनों में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि समान रूप से भाग लेते थे। 12 नवम्बर सन् 1946 को उनका स्वर्गवास हो गया। उनके अन्तिम संदेश में हिन्दू–संगठन हिन्दू जागरण की कातर पुकार है।

– इन्द्र मोहन गोस्वामी
कार्यवाहक प्रधान

TO TAKE A PLEDGE

"Whenever we have a duty to fulfil, a job to be done, a task to be accomplished or an act to perform we must look upon it in a spirit of self-dedication. There is a difference in completing our work half-heartedly, haphazardly and performing it sincerely, putting our best into it in the spirit of dedication. To put it more bluntly, there is difference in doing an act considering it as an unpleasant burden and in doing it with zeal and enthusiasm like an artist who identifies his wholeself with what he is producing. Noble people receive for themselves their share only after sweating hard in their activities. Through selfless work an individual gains an increasing amount of inner poise. This ideal will always lead us to bliss through realization of the Divinity in us.

Let us, therefore, take a pledge to do our task with a spirit of zeal, enthusiasm, sincerity, sacrifice, pleasure and dedication."

Dr. R.P. Vij
Administrator
Sapt Rishi Ashram, Haridwar

मन के रिश्ते

हम एक सामाजिक व्यवस्था में जीते हैं, समाज के सहारे ही बढ़ते हैं, समाज में अपनी पहचान के प्रति चिन्तित रहते हैं। किन्तु, अनेक बार ऐसे अवसर आते हैं जब हमारा अहंकार हमें समाज से दूर कर देता है। आमतौर पर सक्षम व्यक्ति ही सबसे पहले स्वयं को समाज से ऊपर मानने लगता है। चाहे धन बल के कारण हो, सत्ता बल से हो अथवा बुद्धि बल से। साधारण मध्यम श्रेणी का व्यक्ति तो आमतौर पर समाज के नियम और परम्पराओं की मर्यादा में जीता है।

ईश्वर ने हमें एक परिवार, एक परिवेश में पैदा किया है। स्वजन दिए हैं, विशेष परिस्थितियों में जीवन जीते हुए, दिया है। हम अपनी मर्जी से किसी को भी नहीं बदल सकते। तो क्या इस परिवेश को नकारना ईश्वर के आदेश की अवहेलना नहीं है ? हमें इस बात का गर्व है कि हम किसी के मामा हैं, तो किसी के भांजे। किसी के अधिकारी हैं, तो किसी के शुभचिन्तक। हमारा यह भी प्रयास रहता है कि ये सब हमारी प्रशंसा करें और हमारा सम्मान भी बढ़ता रहे। ये सब हम पर गर्व करें। हमें समय–समय पर इनके सहारे की भी आवश्यकता महसूस होती है और विश्वास भी रहता है कि ये हमारे है, अतः अवश्य सहायता करेंगे। कोई नहीं करे तो हमें बुरा भी लगता है।

जीवन में ये सभी रिश्ते मन के होते हैं। भावप्रधान होते हैं। स्नेह, माधुर्य और सम्मान पर आधारित होते हैं। इन सम्बन्धों में जैसे ही बुद्धि का प्रवेश होता है, गड़बड़ शुरू हो जाती है। हम हर शब्द और कार्य में बाल की खाल निकालने लग जाते हैं। अपने को ही सही मानकर बात करते हैं, तर्क हमारा हथियार बन जाता है। मन छूमन्तर हो जाता है। अहंकार इतना बढ़ जाता है कि व्यवहार में हम रावण हो जाते हैं। स्वयं के अलावा किसी को सही मानते ही नहीं। किसी की सलाह हमारे काम नहीं आती और टकराव बढ़ते–बढ़ते मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है।

यह एक भयानक परिस्थिति है। तनाव का भी यह प्रमुख कारण है। यदि हमारे व्यवहार की भाँति ही परिजन भी हमसे व्यवहार करने लगें तो भी हमें सहन नहीं होगा। किसी के यहाँ काम पड़े और हमें निमंत्रण नहीं मिले तो हम आहत महसूस करते हैं। किसी से भी कह नहीं सकते और हमारे नहीं जाने पर भी लोग हंसते हैं। जब उसकी सूचना हम तक पहुंचती है तो अपमान के घाव गहरे हो जाते हैं। मन में तनाव गहरा हो जाता है।

अहंकार से ग्रस्त ऐसे व्यक्ति इतना भी नहीं सोचते कि हमारे परिजन भी हमारे व्यवहार से चिन्तित होते होंगे। उनके मन में भी हमारे लिए कोई दर्द है, वे भी आहत होते होंगे। इसका दूसरा पक्ष यह है कि एक व्यक्ति के साथ उसके स्वजन, पत्नी, बच्चे, मां–बाप सभी जुड़े हैं। समाज के साथ उनका व्यवहार भी जुड़ा है और उससे वह भी प्रभावित होता है। उसके व्यवहार के कारण पूरे परिवार के लोग कष्ट पाते हैं। न वे अपना दायित्व निभा पाते हैं। और न ही अपनी इच्छा व्यक्त कर पाते हैं। वे व्यवहार निभाना चाहते हैं, किन्तु भय का एक वातावरण उन्हें त्रस्त किए रहता है। परस्पर सुख का एहसास नहीं हो पाता। और न ही व्यक्ति अपने स्वजनों के साथ सामूहिक जीवन जी पाता है।

अहंकार की इस लड़ाई के दो स्वरूप सामने आते हैं। एक तो यह कि लड़ाई में अधिकारों पर ही जोर बढ़ता रहता है। इस स्थिति में घर के बड़े–बूढ़ों को भी प्रकृतिदत्त अधिकार तक प्राप्त नहीं हो सकते। न वे कुछ कहने की स्थिति में रहते हैं, न ही उनकी कोई बात सुनी जाती है।

सारे के सारे अधिकार अहंकारी व्यक्ति छीन कर स्वयं में ही समाहित कर लेता है। उसके बारे में निर्णय करने का अधिकार भी किसी को नहीं देता। वातावरण पर तो इसका प्रभाव पड़ता ही है, मानसिक द्वन्द्व की स्थिति भी निरन्तर बनी रहती है। सारी बुद्धि अशान्ति बनाए रखने में लगी होती है।

दूसरी ओर दायित्व बोध को भी पूरी तरह नकार दिया है। यदि ईश्वर ने किसी को बड़ा बनाया है तो उसकी बात मानना हमारा कर्त्तव्य बनता है। उसे हम हितैषी तक नहीं मानें, उसकी अवज्ञा करें और आलोचना करते रहें तो दायित्व बोध कहाँ रह जाता है ? यदि कोई बात सही नहीं लगे तो चुप भी रहा जा सकता है। बुरा करने से तो बच ही सकते हैं। बड़ों के प्रति व्यवहार और सेवा–सम्मान का दायित्व भी नकारात्मक हो जाता है। आदान–प्रदान भी बंद होकर रह जाते हैं। व्यक्ति का अस्तित्व ही सिमट जाता है।

अन्य परिस्थितियों के पैदा होने का खतरा भी सदा बना रहता है। हर व्यक्ति रावण नहीं बन सकता। उसने तो सोच समझकर सीता का अपहरण किया था और मरते समय उसके परिणामों का सामना साहस के साथ किया था, चाहे उसका विनाश ही क्यों न हुआ हो।

समर्पण की मिठास

आज का व्यक्ति भावनात्मक धरातल पर कमजोर होता है, वह धैर्य, धृति एवं विवेक शीघ्र ही खो बैठता है। अपने ही व्यवहार से होने वाली ग्लानि, कुण्ठा एवं अपमान को सहन करने की क्षमता तो उसमें होती ही नहीं। थोड़ी चोट लगते ही विफल होने लगता है। अहंकार की अकड़ उसे झुकने भी नहीं देती। मानसिक तनाव इतना बढ़ जाता है कि व्यक्ति अपना संतुलन खो जाता है पूरे परिवार को संकट में डाल देता है। आज तो इस प्रकार के उदाहरण चारों ओर देखे जा सकते हैं।

प्रश्न उठते हैं कि क्या हम अपना दायित्व निभाने से छोटे हो जाते हैं ? क्या बड़ों को बड़ा मानकर उनकी बात को ऊपर रखना और अपनी बात को नीचा कर लेना अपमानजनक हैं ? क्या बड़ों का अपना करके अपना सम्मान बचाया जा सकता है ? क्या हमें अपने व्यवहार से दूसरे को कष्ट में डालने का अधिकार है ? क्या ईश्वर प्रदत्त सुखों से हम व अन्य एक साथ सुखी हो सकते हैं ? इन प्रश्नों के उत्तर अहंकार और समर्पण के बीच का संघर्ष ही तय कर सकता है। अहंकार में व्यक्ति टूटता है, झुकता नहीं है।

दूसरी ओर समर्पण में नरमी आती है, मिठास आती है, आनन्द भाव समाहित रहता है। न कोई छोटा होता है न ही कोई बड़ा। हर जीव अपने आप में स्वतंत्र रहता हुआ सुख से जीता है। जीव अपने में स्वतंत्र रहता हुआ सुखपूर्वक जीता है। किसी जीव की स्वतंत्रता हनन करने का भाव मन में कभी नहीं आता। हर रिश्तेदार ईश्वर के प्रसाद की तरह मीठा लगता है।

अधिकार – बोध समाप्त होकर केवल दायित्व – बोध रह जाता है। चारों ओर बस आनन्द ही रह जाता है। एक–दूसरे को देखकर मन में प्रसन्नता का भाव आता रहता है। एक–दूसरे के सहयोग से जीवन–यात्रा में व्यक्ति अपने सभी उद्देश्यों की पूर्ति कर लेता है।

किसे पता, अगले जन्म में फिर क्या हो ? किस परिवेश में हों ? वह सब तो सर्वथा अदृष्ट और अव्यक्त ही है।

सुरेन्द्र कुमार जोशी
सेवानिवृत REC सूरतगढ़, जिला श्रीगंगानगर

श्री जगद्देव सिंह संस्कृत महाविद्यालय सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वारम्
वार्षिक रिपोर्ट 2019–2020

ब्रह्मलीन त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी महाराज (तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब) द्वारा स्थापित तथा भारतरत्न पं. जवाहरलाल नेहरु जी प्रधानमंत्री भारत सरकार द्वारा उद्घाटित यह महाविद्यालय सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में स्थित है। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा इस महाविद्यालय को सन् 1973 से साहित्याचार्य तथा सन् 1976 से व्याकरणाचार्य की स्थाई मान्यता प्राप्त है। उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा महाविद्यालय को योगाचार्य, पी.जी.डिप्लोमा योग तथा ज्योतिषाचार्य विषयों की सन् 2008 से अस्थाई मान्यता प्राप्त है जिसकी शीघ्र स्थाई होने की आशा है।

सत्र 2019–2020 की छात्र संख्या का विवरण

प्रथम	पूर्वमध्यमा	उत्तरमध्यमा	शास्त्री	आचार्य	योगाचार्य	योग
07	61	60	96	38	123	385

महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम 2018–2019

	कक्षा	प्रविष्ट	उत्तीर्ण	प्रतिशत
01	योगाचार्य	138	138	100%
02	आचार्य	54	54	100%
03	शास्त्री	81	75	93%
04	उत्तरमध्यमा	63	63	100%
05	पूर्वमध्यमा	80	70	88%
06	प्रथमा	27	27	100%

महाविद्यालय में आयोजित उत्सव – सत्रारम्भ समारोह, संस्कृत दिवस, श्रावणी पर्व, वाद–विवाद, गीत–संगीत तथा अन्त्याक्षरी आदि प्रतियोगितायें छात्रों के बौद्धिक व नैतिक विकास के लिए आयोजित की जाती हैं। विद्यालय की वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन प्रतिवर्ष किया जा रहा है। राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत छात्रों द्वारा रैलियां निकालकर स्वच्छ भारत हेतु जनता को भी जागृत किया जाता है। राष्ट्रीय दिवसों पर विभिन्न कार्यक्रम एवं देशभक्ति परक गीत छात्रों द्वारा प्रस्तुत किये जाते हैं। 24–25 दिसम्बर को मालवीय जयन्ती पर विभिन्न क्रीड़ा प्रतियोगितायें आयोजित की जाती हैं। जिसमें विजेताओं को चल–अचल विजयोपहार प्रदान किये जाते हैं। विद्यालय में हस्तकन्दुक, क्रिकेट, बैडमिन्टन, कबड्डी, गोला फेंक, भाला फेंक आदि खेलों की उत्तम व्यवस्था है। विद्यालय के छात्र अन्यत्र भी प्रतियोगिताओं में भाग लेकर चल–अचल विजयोपहार प्राप्त करने में समर्थ होते हैं।

छात्रों द्वारा प्राप्त उपलब्धियाँ –

विगत 2018–2019 में हमारे महाविद्यालय के छात्र श्री रोहन बुड़ाकोटि एवं अभिषेक शर्मा ने उत्तराखण्ड संस्कृत बोर्ड में शीर्षस्थ दस विद्यार्थियों में स्थान प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया।

महाविद्यालय के छात्रों ने उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी द्वारा आयोजित संस्कृत प्रतियोगिता में गायन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा चयनित क्रिकेट टीम – नोर्थ जोन क्रिकेट प्रतियोगिता में हमारे महाविद्यालय के छात्रों ने प्रतिभाग लिया।

महाविद्यालय की दैनिक गतिविधियाँ – प्रातः सन्ध्यावन्दन, महर्षि महेशयोगी शिक्षण संस्थान हॉलेण्ड द्वारा प्रायोजित भावातीत ध्यान एवं रूद्राभिषेक। सन्ध्याकालीन सन्ध्यावन्दन, ध्यान एव सायंकालीन गंगा आरती व शिवमहिम्न स्त्रोत का दैनिक पाठ होता है।

प्रधानाचार्य

FACULTY DEVELOPMENT PROGRMME

Faculty development progrmme for the schools directly being managed by Shri Sanatan Dharma Pratinidhi Sabha Punjab, New Delhi and Goswami Ganesh Dutt Education Society were held on 21st and 22nd September, 2019 at G.G.D.S.D College, Rajpur, Palampur (H.P) for S.D. Schools in Himachal and on 10th October, 2019 at S D Phullarwan Girls Sr. Sec. School, Jalandhar, for Jalandhar and Phillaur Schools, on 11th October, 2019 at G.G.D.S.D. College Hariana, for S.D.Schools of District Hoshiarpur and on 12th October, 2019 at H S D Girls Sr. Sec. School Gurdaspur.

The said program was successfully conducted by Mr Narinder Aggarwal, Chairman and Director Gurukul Drona under able guidance of Dr. Desh Bandhu, Dr. Gurdeep Sharma, Dr. Vivek Kumar Sharma and Mr. Maninder Sharma.

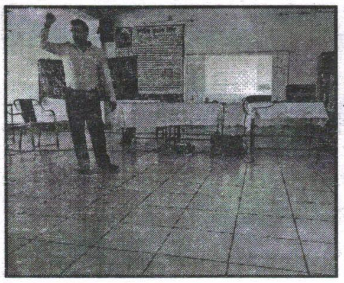

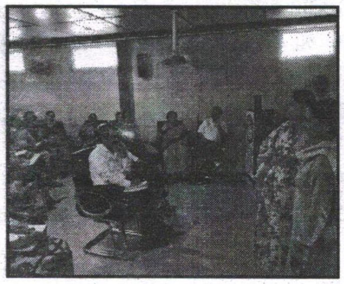

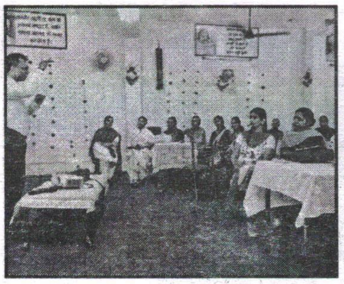

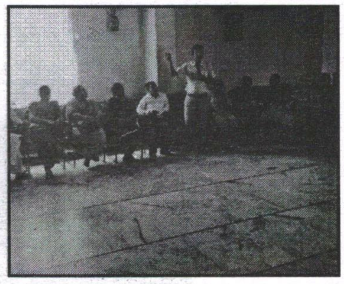

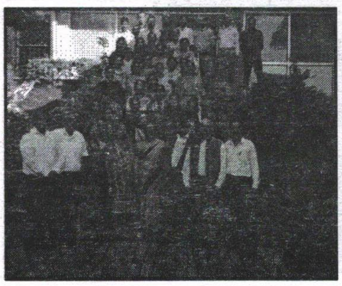

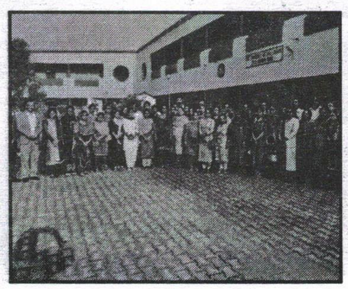

जी.जी.डी. एस.डी.सी. सै. स्कूल, हरयाणा की गतिविधियाँ

26 अप्रैल, 2019 – 26 अप्रैल को स्कूल में 'पृथ्वी दिवस' मनाया गया। 'पृथ्वी दिवस' पर बच्चों ने पृथ्वी से सम्बन्धित चार्ट, मॉडल, पेंटिंग आदि बनाये, जिसमें पृथ्वी को सुरक्षित रखने का प्रण लिया गया।

10 मई, 2019 – 10 मई को स्कूल में 'मातृ दिवस' मनाया गया। इस अवसर पर बच्चों ने माँ को समर्पित अनेक तरह के चित्र, पेंटिंग आदि बनाये जो माँ के निःस्वार्थ प्रेम को व्यक्त करते थे।

16 मई, 2019 – 16 मई को बच्चों तथा अध्यापकों द्वारा मिलकर 'डेंगू निवारण दिवस' मनाया गया। इस अवसर पर बच्चों तथा अध्यापकों ने अपने इर्द–गिर्द को साफ रखने का प्रण लिया ताकि डेंगू को फैलने से रोका जा सके।

29 मई, 2019 – 29 मई को स्कूल में 'पर्यावरण दिवस' पर बच्चों ने चार्ट, मॉडल, पेंटिंग आदि बनाये। साथ ही बच्चों को स्कूल के अध्यापकों ने पर्यावरण को साफ तथा स्वच्छ रखने के लिए जागरुक किया ताकि हमारी प्रकृति सुरक्षित रहे।

12 जुलाई, 2019 – 12 जुलाई को स्कूल में 'नशा मुक्ति भाषण प्रतियोगिता' करवाई गई जिसमें स्कूल के बच्चों ने नशे से बचने के लिए भाषण प्रतियोगिता में भाग लिया। साथ ही बच्चों ने नशा मुक्ति से सम्बन्धित चार्ट, मॉडल, पेंटिंग आदि बनाये।

9 अगस्त, 2019 – 9 अगस्त को स्कूल में बच्चों तथा अध्यापकों द्वारा मिलकर 'तीज पर्व' मनाया गया। इस दिन बच्चों ने लोकनाच, भंगड़ा आदि गतिविधियों में भाग लिया तथा बच्चे घर से पकवान आदि बनाकर लाये जिस से उन्होंने आपस में बाँटकर खाया।

15 अगस्त, 2019 – 15 अगस्त को स्कूल के बच्चों तथा अध्यापकों ने बड़े उत्साह के साथ 'स्वतन्त्रता दिवस' मनाया। स्कूल में तिरंगा झण्डा फहराया गया तथा बच्चों को मिठाई बाँटी गई।

22 अगस्त, 2019 – 22 अगस्त को स्कूल में 'श्री कृष्ण जन्म अष्टमी' मनाई गई। बच्चों ने कृष्ण जी के जन्मदिन से सम्बन्धित रहस्य को जाना, जिस पर स्कूल के अध्यापक ने भाषण दिया था।

5 सितम्बर, 2019 – 5 सितम्बर को डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जन्मदिन को बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। बच्चों ने श्यामपट पर उनके चित्र बनाये तथा उनके जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त की।

21 सितम्बर, 2019 – 21 सितम्बर को स्कूल में 'अन्तर्राष्ट्रीय शांति दिवस' मनाया गया। जिस में बच्चों ने अनेक प्रकार के शांति से सम्बन्धित चार्ट, मॉडल पेंटिंग आदि बनाये। 21 सितम्बर को नौवीं–दसवीं कक्षा में कबड्डी का मैच भी करवाया गया।

2 अक्तूबर, 2019 – 2 अक्तूबर को 'गांधी जी' के जन्मदिवस पर बच्चों ने उनके जीवन से सम्बन्धित भाषण, कविताएँ, लेख आदि एक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें बच्चों ने अच्छा प्रदर्शन किया।

उपलब्धियों की कुछ झलकियां

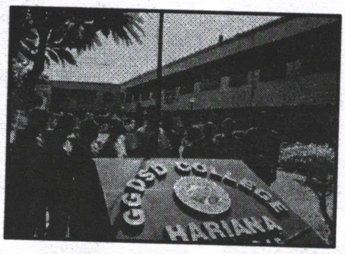

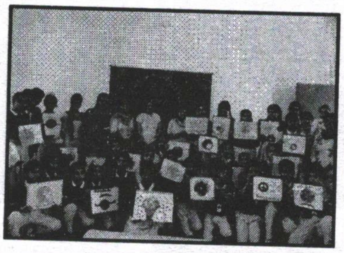

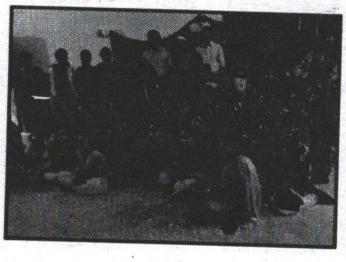

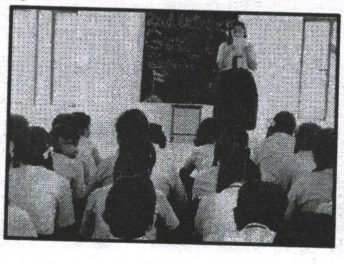

एस.डी. फुल्लर्वान कन्या सीनियर सैकेंडरी स्कूल, जालन्धर
अप्रैल, 2019 से नवम्बर, 2019

Achievements in Co-Curricular Activities

1. राज्य स्तरीय स्वतन्त्रता दिवस समारोह में गिद्दा प्रस्तुति में स्कूल का प्रदर्शन सर्वोत्तम रहा।
2. भारत विकास परिषद् द्वारा आयोजित Distt. Level National Group Song Competition में स्कूल विजयी रहा और पिछले चार वर्षों से लगातार विजेता रहा है।
3. Distt. Level 'Hind Di Chaddar Sh. Guru Teg Bahadur Ji विषय पर भारत विकास परिषद् द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता में दो विद्यार्थियों का प्रथम स्थान रहा। दोनों दिसम्बर में होने वाली राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयनित हुए हैं।
4. 5th International humanity Olympiad 2019 में जूनियर वर्ग व सीनियर वर्ग में तमन्ना और सानिया स्कूल टापर रहे।
5. Lok Sabha Elections 2019 Volunteer services प्रदान करने हेतु स्कूल मुख्याध्यापिका जी व 6 विद्यार्थियों को जिला प्रशासन की ओर से प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

Achievements in Sports

1.	Zonal Level Hockey Tournament U-14, U-17, U-19	First
2.	Distt. Level Hockey Tournament U-14, U-17	Second
3.	State Level Hockey Tournament U-17	Third
4.	Distt. Level Judo Tournament U-14	Silver Medal (1), Bronze Medal (4)
5.	Distt. Level Judo Tournament U-17	Gold (1), Silver (2), Bronze Medal (1), Participation (1)
6.	Distt. Level Judo Tournament U-19	Gold (1), Bronze Medal (1)
7.	State Level Judo Tournament U-17 (Tarantaran)	Participation (1)

8. बाल बैडमिंटन खेल इस वर्ष स्कूल में शुरु की गई। राज्यस्तर पर इस स्कूल की चार छात्राएँ टीम के लिए चुनी गई और यह टीम प्रथम रही। इन्हीं 4 खिलाड़ियों ने जिला दुर्ग, छतीसगढ़ में भाग लिया।

NCC

1. Miss Sakshi selected for RD camp held at Delh.
2. CATC Camp at Ropar –
   5 Cadets attended & participated in Solo Dance, Group Song, Painting Competition, Films Completion.
3. CATC Camp of LPU Phagwara, Jalandhar – 10 Cadets are attending it.
4. CATC Camp at HMV Jalandhar – 18 cadets attending it. First in Group Song, Solo Song, Solo Dance, Painting & Second in group dance.

NSS

1. National Level NSS Camp was held at Ahmedabad. 10 students attended the camp w.e.f. 29.04.19 to 08.05.19.
2. State Level NSS camp at Manali was attended by 5 students w.e.f. 10.08.19 to 20.08.19.

मुख्याध्यापक

एस.डी. फुल्लर्वान कन्या सी. सै. स्कूल, जालन्धर की विविध क्षेत्रीय उपलब्धियों की झलकियाँ

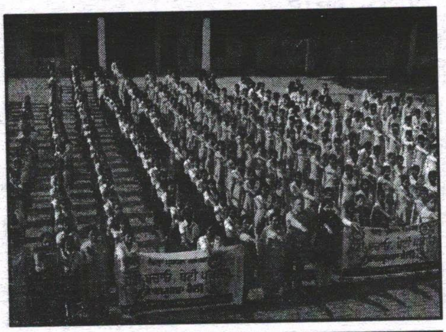

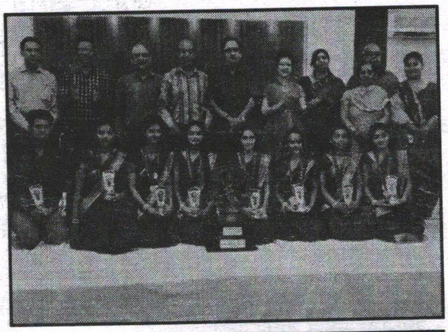

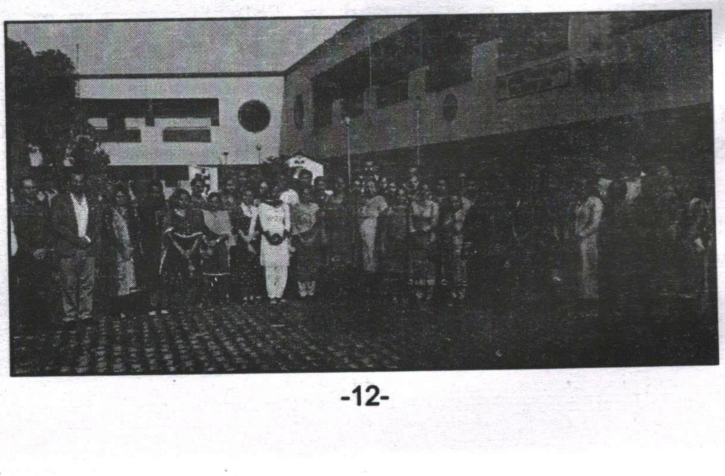

पंडित अमरनाथ एस.डी. सी.सै. पब्लिक स्कूल, बैजनाथ गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

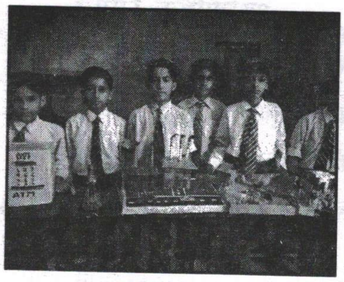

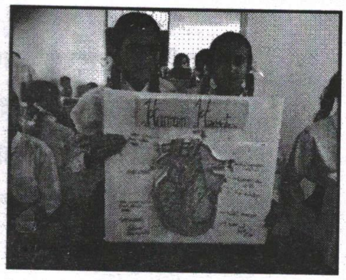

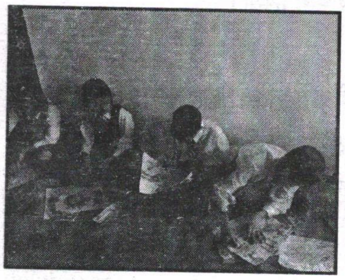

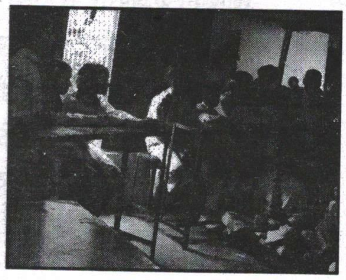

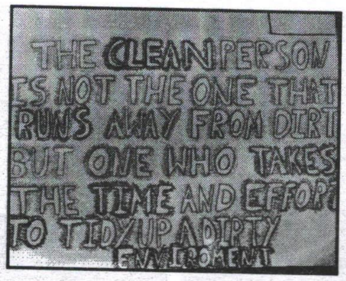

एन.के. एस.डी. पब्लिक सी.सै. स्कूल, मोहरला गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

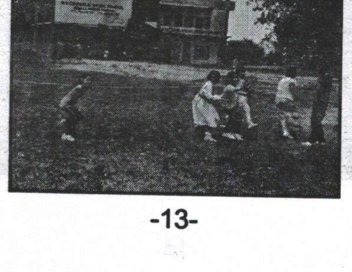

दीवान चमन लाल कत्याल एस.डी. पब्लिक स्कूल हरयाना (सत्र 2019–20)
अर्धवार्षिक रिपोर्ट

1. हर वर्ष की तरह इस वर्ष के नए सत्र की शुरुआत हवन से हुई।
2. मदर्स डे पर बच्चों से कार्ड एवं चार्ट बनवाए गए।
3. जून में छुट्टियों के दौरान बच्चों की 15 दिन की नृत्य कक्षाएँ लगाई गई।
4. जुलाई महीने में बच्चों को मनोरंजक Animated Movie 'The Lion King' दिखाने के लिए होशियारपुर ले जाया गया।
5. रक्षाबंधन के अवसर पर बच्चों ने राखी बनाने की प्रतियोगिता में बढ़–चढ़ कर भाग लिया।
6. स्वतंत्रता दिवस पर झंडा फहराकर रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।
7. जन्माष्टमी के अवसर पर बच्चों ने श्री कृष्ण एवं राधा का रूप धारण कर फैंसी ड्रैस प्रतियोगिता में भाग लिया।
8. 2 अक्टूबर को गाँधी जयंती के अवसर पर 'स्वच्छ भारत अभियान' विषय पर ड्राईंग प्रतियोगिता करवाई गई। बच्चों ने गाँधी जी एवं अनेक देश भक्तों का रूप धारण कर प्रतियोगिता में भाग लिया।
9. दीपावली के अवसर पर बच्चों ने स्कूल को सजाया एवं गीतों पर नृत्य किया।

मुख्याध्यापक

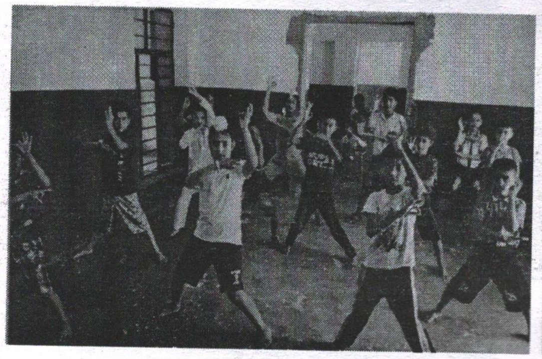

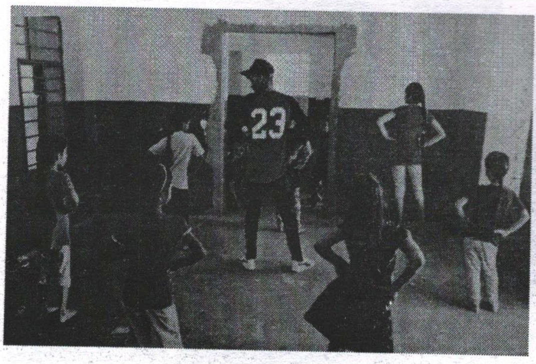

H.S.D. Girls Sr. Sec. School, Geeta Bhawan, Gurdaspur (Achievements)

S. No.	Class	Student's Name	Game/ Tournament DTC	Position
1	10th	Sarwan	Atheletics 400 metre	1st Gold Medal
2	10th	Sarwan	Atheletics 200 metre	2nd Silver Medal
3	10th	Sarwan	atheletics 100 metre	3rd Bronze Medal
4	12th	Abhi Sharma	800 metre	2nd Silver Medal
5	11th	Sandeep	Triple Jump	2nd Silver Medal
6	9th	Krishna	Short put	3rd Bronze Medal
7	10th	Shivam	200 metre	2nd Silver Medal
8	10th	Anjali Sharma	Bedminton	1st Gold Medal
9	10th	Anushka	800 metre	3rd Bronze Medal
10	8th	Simran	Gymnastic 4 Events	1st Gold Medal
11	8th	Simran	Beam floor bar	2nd Silver Medal
12	8th	Simran	Volt	1st Gold Medal
			Open Touramant	
13	10th	Sarwan	200 metre	1st Gold Medal
14	12th	Dheeraj	Long Race	2nd Silver Medal
15	11th	Sandeep	Triple Jump	2nd Silver Medal
16	10th	Shivam	400 metre	3rd Bronze Medal
		Bharat Vikas Parishad Group Song Competition District Level		
17	Group	Singing Competition	Hindi Song	1st Position
18	Group	Singing Competition	Sanskrit Song	2nd Position
		Bharat Vikas Parishad Group Song Competition State Level		
19	Group	Singing Competition	Hindi/ Sanskrit	2nd Position

मुख्याध्यापक

ब्रह्मलीन पूज्यपाद स्वामी सत्यमित्रानन्द जी महाराज
श्रद्धांजलि

सनातन धर्म, दर्शन व संस्कृति के परम पुरोधा एवं अनवरत योद्धा, सन्तशिरोमणि, विश्व विख्यात, भारत माता मन्दिर, हरिद्वार के संस्थापक, निवृत्त जगद्गुरु शंकराचार्य, भक्ति–ज्ञान–कर्म के त्रिवेणी स्थल, पदमभूषण, चिरन्तन सत्य के संग निरन्तर असंग मैत्री का निर्वहन कर इहलौकिक जीवन–जगत् में मनसा–वाचा–कर्मणा अखण्ड आनन्द की अजस्र स्रोतस्विनी प्रवाहित कर कोटि कोटि भक्त जनों को आनन्दित कर सत्यमित्रानन्द की संज्ञा को सार्थक करने वाले स्वनामधन्य, परम श्रद्धेय, पूज्यपाद गुरुदेव स्वामी सत्यमित्रानन्द जी महाराज अपना पंचभूतजन्य स्थूल देह त्याग कर परम तत्त्व में विलीन हो गए हैं। उनके महाप्रयाण से भारत के आध्यात्मिक और धार्मिक जगत् में जो रिक्तता आई है वह अपूरणीय है। सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब पर परम पूज्य स्वामी जी महाराज का विशेष स्नेह एवं शुभाशीष रहा है। पूज्य स्वामी जी हमारी प्रतिनिधि सभा के संरक्षक रहे हैं। हमें धार्मिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक सम्मेलनों में सदैव स्वामी जी का मार्गदर्शन व आशीर्वाद मिलता रहा है। श्रद्धेय स्वामी सत्य मित्रानन्द जी महाराज के महाप्रयाण से हमारी प्रतिनिधि सभा की अपूरणीय क्षति हुई है। आज स्वयं सत्यमित्र आनन्द का कलश लेकर अपने निराकार रूप में प्रभु के द्वार गए हैं। यह जीवात्मा का परमात्मा से मिलन है। कलश के आनन्दरस का विराट सागर के अगाध–अनन्त–असीम आनन्दरस में विलय है। एक लौकिक दिव्य चेतना का विराट अलौकिक चेतना से मधुर मिलन है। पर हमारे लिए स्वामी जी से चिर वियोग है। हम आहत हैं, व्यथित हैं। पर स्वामी जी के कर्मयोगी एवं श्रेष्ठ जीवन से प्रेरणा लेते हुए दुख की इस घड़ी में भी स्थिर चित्त हैं। क्योंकि स्वामी जी के उपदेश हमारा संबल हैं। सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा का सनातन परिवार स्वामी जी महाराज को कोटि–कोटि नमन करता हुआ उन्हें श्रद्धा सुमन समर्पित करता है।

– डॉ. शिव कुमार शर्मा, प्रधान
सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब

श्रद्धेय पूज्यपाद स्वामी सत्यमित्रानन्द जी को सादर समर्पित श्रद्धांजलि

तपोनिष्ठ अध्यात्म शक्ति सम्पन्न, कविहृदय भारत माता मन्दिर के संस्थापक, जनप्रिय समाजसुधारक, पदमभूषण, महामण्डलेश्वर ब्रह्मलीन पूज्यस्वामी सत्यमित्रानन्द जी, आज हमारे बीच नहीं हैं। किन्तु उनकी आध्यात्मिक चेतना के फलस्वरूप आज अनेक व्यक्ति आदर्श जीवन जीकर अपने को सौभाग्यशाली मान रहे हैं। सरल स्वभाव के होने के कारण प्रायः सभी व्यक्ति निर्भय होकर आपके सन्निकट जाकर अपनी समस्याओं का समाधान कर लेते थे। उत्तर प्रदेशान्तर्गत आगरा शहर के सम्भ्रान्त ब्राह्मण परिवार में 10 सितम्बर, 1932 में जन्म लेने के बाद अध्यात्म में विशेष रूचि होने के कारण आप सीधे हरिद्वार चले आये। माता त्रिवेणी देवी एवं पिता शिवशंकर पाण्डेय जी उनकी इस त्यागमयी प्रवृत्ति से बहुत प्रसन्न रहते थे। उनकी इसी भावना के फलस्वरूप स्वामी जी आध्यात्मिक शिक्षा हेतु ऋषिकेश आये, स्वामी सदानन्द जी से संन्यास की परम्परा में दीक्षित होने के बाद आप को 29 अप्रैल 1960 अक्षयतृतीया तिथि के शुभअवसर पर भानुपुर पीठ के शंकराचार्य का दायित्व सौंपा गया। किन्तु 09 वर्ष तक धर्म व मानव समाज के कल्याण हेतु सेवा कार्य में संलग्न होने के बाद 1969 में हस्तगृहीत दण्ड का भी त्याग कर दिया। तथा शंकराचार्य पद के भार से मुक्त होकर समाज सेवा व ईश्वर चिन्तन में अपना जीवन व्यतीत करने लगे।

आदरणीय स्वामी जी की भारत माता के प्रति अगाध भक्ति एवं श्रद्धा थी। यही कारण है कि उन्होंने हरिद्वार नगर के सन्निकट सप्तऋषियों की पुण्य स्थली में 108 फीट ऊँचे विशाल भारत माता मन्दिर का निर्माण करवाया जिसका उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने किया। यह एक ऐसा मन्दिर है जहां प्रतिवर्ष विश्व के देशों से असंख्य पर्यटक दर्शन करने आते हैं। राष्ट्रभक्ति से ओत–प्रोत अनेक हुतात्माओं की आकर्षक मूर्तियां इस मन्दिर में स्थापित की गयी हैं जिनका दर्शन कर लोग अपने जीवन को कृतार्थ करते हैं।

स्वामी जी ब्राह्मण तथा संस्कृत छात्रों के परम हितैषी थे। अनेक अवसरों पर गरीबों और दीन दुःखियों पर दया कर जीवनोपयोगी साधन प्रदान कर उन्हें संतुष्ट भी करते थे। उनके इसी सामाजिक सेवा एवं राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव को देखकर भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण उपाधि से विभूषित किया। आप के मार्गदर्शन में सप्तऋषि आश्रम स्थित पाण्डाल में अनेक यज्ञों का आयोजन भी किया गया। विगत वर्ष सम्पादित भारतमाता यज्ञ विश्व का एक अभूतपूर्व यज्ञ था। जिसमें अनेक ब्राह्मणों ने उत्साह पूर्वक यज्ञ में भाग लेकर भारत माता की सेवा की। हमारे महाविद्यालय एवं सप्तऋषि आश्रम को प्रति वर्ष अनेक प्राकरेण आप का आशीर्वाद मिलता ही रहा है। हम उनका आशीर्वाद प्राप्त कर कृतार्थ हो गये। किन्तु काल द्वारा कवलित इस महापुरूष का ब्रह्मरूप में लीन हो जाने के कारण, हमें उनकी कृपा नहीं प्राप्त हो सकती ऐसा कभी नहीं कहा जा सकता। महापुरूष शरीरत्याग करने के बाद भी व्यापक होने के कारण उनका अनुग्रह तथा कृपा प्रसाद सभी को प्राप्त होता रहता है। सप्तऋषि आश्रम एवं महाविद्यालय परिवार उनके पावन चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

विनीत

सप्तऋषि आश्रम एवं श्री जगद्देव सिंह संस्कृत महाविद्यालय परिवार

पद्मभूषण महामण्डलेश्वर ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि जी महाराज
(संक्षिप्त परिचय)

सनातन परंपरा के संतों में सहज, सरल और तपोनिष्ठ स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि का नाम उन संतों में लिया जाता है, जिनके आगे कोई भी पद या पुरस्कार छोटे पड़ जाते हैं। तन, मन और वचन से परोपकारी संत सत्यमित्रानंद आध्यात्मिक चेतना के धनी थे। उनका जन्म 19 सितंबर 1932 में आगरा के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम शिव शंकर पांडेय और माता का नाम त्रिवेणी देवी था। प्रारंभ से ही धर्म–अध्यात्मक में रुचि होने के कारण वे एक दिन अध्यात्म की खोज करते–करते हरिद्वार पहुंचे। स्वामी सत्यमित्रानंद जी की आध्यात्मिक शिक्षा ऋषिकेश में हुई।

स्वामी सत्यमित्रानंद जी को 29 अप्रैल, 1960 को अक्षय तृतीया के दिन मात्र 28 वर्ष की आयु में भानपुरा पीठ का शंकराचार्य बना दिया गया। स्वामी सदानंद जी महाराज ने उन्हें संन्यास की दीक्षा दी। करीब नौ वर्ष तक धर्म और मानव के निमित्त सेवा कार्य करने के बाद उन्होंने 1969 में जिस को धारण करने मात्र से ही 'नशे में जिस दण्ड को धारण करने मात्र से ही 'नरो नारायणो भवेत्' का ज्ञान हो जाता है, उसे गंगा में विसर्जित कर दिया। उन्होंने उस शंकराचार्य के पद को बड़ी सहजता से छोड़ दिया, जिसे पाने के लिए बड़े संत लालायित रहते हैं या फिर कहें जिसे लेकर आज तमाम लोगों के बीच विवाद जारी है। निरंजनी अखाड़े के महामंडलेश्वर स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि में भारत माता के प्रति अगाध श्रद्धा और प्रेम था। धार्मिक–आध्यात्मिक परंपरा का पालन करने वाले स्वामी जी भारत माता को सर्वोच्च मानते थे। अपनी इसी श्रद्धा और प्रेम को प्रकट करते हुए उन्होंने हरिद्वार में 108 फीट ऊंचे भारत माता के विशाल मंदिर का निर्माण करवाया था। जिसका उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया था। भारत माता के नाम से ही प्रसिद्ध इस मंदिर को देखने के लिए आज भी देश–विदेश से लोग पहुंचते हैं। धर्म और राष्ट्र भक्ति के संगम कहलाने वाले इस मंदिर में देश के तमाम देशभक्तों, संतों की प्रतिमाओं के दर्शन करने को मिलते हैं।

पद्मभूषण से अलंकृत स्वामी सत्यमित्रानंद जी भले ही हिंदू धर्म से जुड़े हुए संत थे, लेकिन उन्हें अन्य धर्मों के विषय में भी बहुत ज्ञान था। उनका मानना था कि अपने धर्म के प्रति गौरव की भावना और दूसरे धर्म के प्रति सहिष्णुता के सिद्धांत से विश्व में शांति आ सकती है। इसी दृष्टिकोण के अनुसार उन्होंने अपने हरिद्वार स्थित आश्रम का नाम समन्वय कुटीर रखा था। अध्यात्म जगत के बड़े हस्ताक्षर स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि छूआछूत के भी प्रबल विरोधी रहे। स्वामी सत्यमित्रानंद जी की धर्म, संस्कृति और लोक कल्याण से जुड़ी सेवाओं को देखते हुए ही केंद्र सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया था। समन्वय कुटीर परिवार पूज्यपाद पद्भूषण स्वामी सत्यामित्रानन्द जी महाराज के पदचिह्नों पर चलने का संकल्प लेते हुए उनका पुण्यपावन स्मरण करता है। उन्हें कोटि–कोटि प्रणाम करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि प्रदान करता है।

– समन्वय कुटीर परिवार

ब्रह्मलीन त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी का समस्त जीवन सनातन धर्म को रहा समर्पित : आई. एम. गोस्वामी

ब्रह्म चिंतन करते हुए हमें कर्म करते रहना चाहिए:- स्वामी प्रेमा नंद जी

'ਵੇਦ ਸ਼ਾਸਤਰਾਂ ਅਨੁਸਾਰ ਜੀਵਨ ਬਤੀਤ ਕਰਨਾ ਸਾਡੀ ਮੂਲ ਪ੍ਰੰਪਰਾ'

गुरदासपुर में लगाई गई वर्कशॉप संबंधी जानकारी देते हुए अध्यापक • जागरण

शिक्षा को रोचक बनाने पर की चर्चा

संस, गुरदासपुर : एसडी कन्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल में एसडी एजुकेशन बोर्ड के कार्यकारी अध्यक्ष प्रिंसिपल डॉ. देशबंधु शर्मा की अध्यक्षता में फैकल्टी डवलपमेंट कार्यक्रम पर एक दिवसीय वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा में गुणवत्ता व व्यापक सुधार लाना रहा। [illegible] के लिए रोचक बनाने पर अध्यापकों के समक्ष अपने विचार सांझा किए। प्रिंसिपल डॉ. देश बंधु ने अध्यापकों को शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक एवं बढ़िया तकनीकों को प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया। [illegible]

गणेश दत्त का समस्त जीवन सनातन धर्म को रहा समर्पित : गोस्वामी

त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त की 60वीं पुण्यतिथि पर आयोजित विशाल धार्मिक समारोह की झलकियां।

हरियाना, 11 जून (आनंद): श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के संस्थापक ब्रह्मलीन त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी की 60वीं पुण्यतिथि पर सप्त ऋषि आश्रम हरिद्वार में 2 दिवसीय विशाल धार्मिक समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यकारी प्रधान आई.एम. गोस्वामी की अध्यक्षता में हुए समारोह के पहले दिन श्रीमद् भागवत पुराण पाठ के भोग डाले गए।

जबकि दूसरे दिन प्रातः हवन यज्ञ के उपरांत गोस्वामी गणेश दत्त महाराज जी के पावन समाधि स्थल पर प्रतिमा पर सभा के पदाधिकारियों, संत समाज व श्रद्धालुओं ने पुष्पमालाएं भेंट कीं। महामंडलेश्वर स्वामी प्रेमानंद जी, स्वामी जगदीशा नंद जी, स्वामी देवा नंद जी, स्वामी अमिता भारती ने गोस्वामी गणेश दत्त जी महाराज के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डाला। इस मौके कार्यकारी प्रधान आई.एम. गोस्वामी ने कहा कि गणेश दत्त का समस्त जीवन सनातन धर्म को समर्पित रहा। इस अवसर पर महासचिव व पूर्व मंत्री पंजाब उपेन्द्र शर्मा, डा. देशबंधु शर्मा, डा. आर.पी. विज, प्रि. गुरदीप शर्मा ने संतजनों को सम्मानित किया।

दैनिक भास्कर

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के अंतर्गत स्कूलों की बैठक

प्रिंसिपलों को स्कूलों की कारगुजारी में व्यापक स्तर पर गुणात्मक सुधार लाने के दिए निर्देश

भास्कर संवाददाता | होशियारपुर

बैठक में महासचिव प्रि. डा. देश बंधु शर्मा, स्कूलों के प्रिंसिपल व अन्य।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के महासचिव डॉ. देश बंधु की अध्यक्षता में जीजीडीएसडी कॉलेज हरियाना में सभा के विभिन्न स्कूलों की सालाना बैठक का आयोजन हुआ जिसमें विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में स्कूलों के सालाना बजट, अध्यापकों के परीक्षा परिणामों, शिक्षा में और अधिक गुणवत्ता लाने तथा भविष्य की योजनाओं की पेश की गई प्रगति रिपोर्ट पर चर्चा करते हुए संतुष्टि जताई। प्रिंसिपलों को स्कूलों की कारगुजारी में और अधिक व्यापक स्तर पर और अधिक गुणात्मक सुधार लाने के निर्देश दिए। डॉ. शर्मा ने क्रमवार प्रिंसिपलों की ओर से स्कूलों के पेश किए गए सालाना बजट को स्वीकृति प्रदान करने के साथ-साथ पेश की गई प्रगति रिपोर्ट पर संतुष्टि जताई। सभा के अध्यक्ष डॉ. शिव कुमार शर्मा ने कहा कि शिक्षा के साथ-साथ छात्रों में सच्चरित्र, नैतिकता एवं ससंस्कारित गुणों का भी समावेश करना हमारी प्राथमिकता है। इस अवसर पर प्रो. डॉ. राजीव शर्मा, दिवान चमन लाल, पूनम चावला, शुचि शर्मा, सोनिया सेखों, पंडित अमर नाथ, अनिल हांडा, नीरज सैनी, सीमा वासुदेवा, नीलम शर्मा, रजनी, पवनदीप आदि उपस्थित थे।

ब्रह्मलीन त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी की पुण्यतिथि पर समागम कल से

हरियाना, 8 जून (आनंद): श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के संस्थापक ब्रह्मलीन त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी की 61वीं पुण्यतिथि 10 जून को सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में श्रद्धा भावना व उत्साह से मनाई जा रही है।

सभा के अध्यक्ष व पूर्व विधायक डा. शिव कुमार शर्मा, महासचिव प्रि. डा. देशबंधु शर्मा एवं आर्गेनाइजर प्रि. डा. गुरदीप शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि सप्तऋषि आश्रम में 10 जून को प्रातः 8 बजे हवन यज्ञ के उपरांत गोस्वामी गणेश दत्त जी महाराज की समाधि पर माल्यार्पण किया जाएगा।

ਵੱਖ-ਵੱਖ ਸਕੂਲਾਂ ਦੀ ਮੀਟਿੰਗ ਦੌਰਾਨ ਸਭਾ ਦੇ ਜਨਰਲ ਸਕੱਤਰ ਡਾ. ਦੇਸ਼ ਬੰਧੂ ਸ਼ਰਮਾ ਅਤੇ ਹੋਰ।

ਸ੍ਰੀ ਸਨਾਤਨ ਧਰਮ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧੀ ਸਭਾ ਪੰਜਾਬ ਅਧੀਨ ਆਉਂਦੇ ਸਕੂਲਾਂ ਦੀ ਮੀਟਿੰਗ 'ਚ ਵਿਚਾਰ-ਵਟਾਂਦਰਾ

ਹਰਿਆਣਾ, 7 ਜੁਲਾਈ (ਆਨੰਦ)- ਉਤਰੀ ਭਾਰਤ ਦੀ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਸ੍ਰੀ ਸਨਾਤਨ ਧਰਮ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧੀ ਸਭਾ ਪੰਜਾਬ ਨਵੀਂ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਤੇ ਸਾਬਕਾ ਵਿਧਾਇਕ ਡਾ: ਸ਼ਿਵ ਕੁਮਾਰ ਸ਼ਰਮਾ ਦੇ ਦਿਸ਼ਾ ਨਿਰਦੇਸ਼ਾਂ ਅਨੁਸਾਰ ਸਭਾ ਦੇ ਜਨਰਲ ਸਕੱਤਰ ਡਾ. ਦੇਸ਼ ਬੰਧੂ ਸ਼ਰਮਾ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਗੀ ਹੇਠ ਜੀ. ਜੀ. ਡੀ. ਐੱਸ. ਡੀ. ਕਾਲਜ ਹਰਿਆਣਾ ਵਿਖੇ ਸਭਾ ਅਧੀਨ ਆਉਂਦੇ ਸਕੂਲਾਂ ਦੀ ਸਾਲਾਨਾ ਮੀਟਿੰਗ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਜਿਸ ਵਿਚ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਮੁੱਦਿਆਂ 'ਤੇ ਵਿਸਥਾਰ ਨਾਲ ਚਰਚਾ ਕੀਤੀ ਗਈ। ਕਾਲਜ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਤੇ ਆਰਗੇਨਾਈਜ਼ਰ ਡਾ. ਗੁਰਦੀਪ ਸ਼ਰਮਾ ਤੇ ਸਮੂਹ ਸਟਾਫ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਕਾਲਜ ਵਿਖੇ ਪਹੁੰਚਣ 'ਤੇ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਸਵਾਗਤ ਕੀਤਾ।

ਮੀਟਿੰਗ 'ਚ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਕੀਤੇ ਗਏ ਨਿਰੀਖਣ ਉਪਰੰਤ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਸਾਲਾਨਾ ਬਜਟ, ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਦੇ ਨਤੀਜੇ, ਸਿੱਖਿਆ 'ਚ ਹੋਰ ਵੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਗੁਣਵੱਤਾ ਲਿਆਉਣ ਅਤੇ ਭਵਿੱਖ ਦੀਆਂ ਯੋਜਨਾਵਾਂ ਦੀ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੀ ਗਈ ਪ੍ਰਗਤੀ ਰਿਪੋਰਟ 'ਤੇ ਚਰਚਾ ਕਰਦਿਆਂ ਸੰਤੁਸ਼ਟੀ ਦਾ ਇਜ਼ਹਾਰ ਕੀਤਾ। ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲਾਂ ਨੂੰ ਸਕੂਲਾਂ ਦੀ ਕਾਰਗੁਜ਼ਾਰੀ 'ਚ ਹੋਰ ਜ਼ਿਆਦਾ ਵੱਡੇ ਪੱਧਰ 'ਤੇ ਗੁਣਾਤਮਕ ਸੁਧਾਰ ਲਿਆਉਣ ਦੇ ਸਖਤ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦਿੱਤੇ ਗਏ। ਡਾ. ਸ਼ਰਮਾ ਨੇ ਲੜੀਵਾਰ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲਾਂ ਵੱਲੋਂ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੇ ਗਏ ਸਾਲਾਨਾ ਬਜਟ ਨੂੰ ਪ੍ਰਵਾਨਗੀ ਦੇਣ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੀ ਗਈ ਪ੍ਰਗਤੀ ਰਿਪੋਰਟ 'ਤੇ ਸੰਤੁਸ਼ਟੀ ਦਾ ਪ੍ਰਗਟਾਵਾ ਕੀਤਾ।

ਉਨ੍ਹਾਂ ਸਭਾ ਵੱਲੋਂ ਚਲਾਏ ਜਾ ਰਹੇ ਮਾਡਲ ਤੇ ਮਾਨਤਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਆਧੁਨਿਕੀਕਰਨ ਤੇ ਵੱਡੇ ਪੱਧਰ 'ਤੇ ਗੁਣਾਤਮਕ ਸੁਧਾਰ ਲਿਆਉਣ 'ਤੇ ਜ਼ੋਰ ਦਿੱਤਾ। ਸਭਾ ਦੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਡਾ. ਸ਼ਿਵ ਕੁਮਾਰ ਸ਼ਰਮਾ ਨੇ ਆਪਣੇ ਸੰਦੇਸ਼ 'ਚ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ 'ਚ ਚਰਿੱਤਰ ਨਿਰਮਾਣ ਅਤੇ ਨੈਤਿਕਤਾ ਸਾਡੀ ਪਹਿਲਕਦਮੀ ਹੈ।

ਇਸ ਮੌਕੇ ਪ੍ਰੋ. ਡਾ. ਰਾਜੀਵ ਕੁਮਾਰ ਸ਼ਰਮਾ, ਦੀਵਾਨ ਚਮਨ ਲਾਲ ਕਤਿਆਲ ਐੱਸ. ਡੀ. ਸਕੂਲ ਦੀ ਇੰਚਾਰਜ ਪੂਨਮ ਚਾਵਲਾ, ਐੱਸ. ਡੀ. ਪਬਲਿਕ ਸੀ. ਸੈ. ਸਕੂਲ ਹਰਿਆਣਾ ਦੀ ਇੰਚਾਰਜ ਸ਼ੁਚੀ ਸ਼ਰਮਾ, ਪ੍ਰਿੰ. ਸੋਨੀਆ ਸਧੀਰ ਐੱਸ. ਡੀ. ਅਤੇ ਪੰਡਿਤ ਅਮਰ ਨਾਥ ਮਾਡਲ ਸਕੂਲ ਸ਼ਾਮਚੁਰਾਸੀ, ਐੱਸ. ਡੀ. ਸਕੂਲ ਬੱਸੀ ਦੌਲਤ ਖਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਿੰ. ਅਨਿਲ ਹਾਂਡਾ, ਜਲੰਧਰ ਫੁੱਲਰਵਾਨ ਸਕੂਲ ਦੀ ਪ੍ਰਿੰ. ਨੀਰਜ ਸੈਣੀ, ਪ੍ਰਿੰ. ਸੀਮਾ ਵਾਸੁਦੇਵਾ ਐੱਸ. ਡੀ. ਸਕੂਲ ਗੁਰਦਾਸਪੁਰ, ਨੀਲਮ ਸ਼ਰਮਾ, ਰਜਨੀ, ਪਵਨਦੀਪ ਆਦਿ ਵੀ ਹਾਜ਼ਰ ਸਨ।

शिक्षा में अधिक गुणवत्ता एवं व्यापक सुधार लाने हेतु वर्कशाप आयोजित

एस.डी. स्कूल हरियाना में आयोजित वर्कशाप का दृश्य। (आनंद)

हरियाना, 13 अक्तूबर (आनंद): सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब नई दिल्ली के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा के दिशा निर्देशानुसार जी.जी.डी.एस.डी. सीनियर सैकेंडरी स्कूल हरियाना में श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब की शिक्षा समिति की ओर से शिक्षा में अधिक गुणवत्ता एवं व्यापक सुधार लाने के लक्ष्य को लेकर फैकल्टी डिवैल्पमैंट प्रोग्राम पर एक दिवसीय वर्कशाप का आयोजन किया गया।

एस.डी. एजुकेशन बोर्ड के कार्यकारी अध्यक्ष तथा सभा के महासचिव प्रि. डा. देशबंधु शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई वर्कशाप में पंजाब तथा हिमाचल के सभा से संबंधित स्कूलों के प्रिंसीपलों तथा अध्यापकों ने शामिल होकर ज्ञानवर्द्धक जानकारी हासिल की। एस.डी. एजुकेशन बोर्ड के महासचिव डा. गुरदीप शर्मा तथा स्कूलों के मैनेजरों के नेतृत्व में हुई वर्कशाप में प्रसिद्ध विद्वान नरेन्द्र अग्रवाल बतौर में मुख्य रिसोर्सपर्सन शामिल हुए।

इस अवसर पर स्कूल अध्यापकों को शिक्षा संबंधी पैदा हो रही अनेक समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए उनमें व्यापक स्तर पर सुधार लाने के लिए गंभीरता से विचार किया गया। वर्कशाप दौरान शिक्षा को विद्यार्थियों के लिए रोचकमय बनाने पर भी चर्चा की गई प्रि. डा. गुरदीप शर्मा ने शिक्षा समिति की ओर से उठाए गए कदमों की सराहना करते हुए कहा कि आयोजित की गई वर्कशाप अध्यापकों को एक नई दिशा प्रदान करेगी। इस मौके अध्यापकों ने सृजनात्मक कार्य करते हुए अपनी दक्षता का बाखूबी प्रदर्शन किया। सभा के महासचिव प्रि. डा. देशबंधु शर्मा ने कहा कि आधुनिक समय में अध्यापकों को अपनी दक्षता व क्षमता को और अधिक परिपक्व करते हुए अन्य रोचक व बढ़िया तरीकों का प्रयोग करना चाहिए ताकि विद्यार्थियों की पढ़ाई में पैदा हो रही उदासीनता को दूर किया जा सके। कार्यक्रम के दौरान प्रि. डा. गुरदीप शर्मा ने अध्यापकों को सर्टीफिकेट वितरित करते हुए धन्यवाद प्रकट किया। मंच संचालन करते हुए स्कूल प्रभारी शुचि शर्मा ने आए मेहमानों के प्रति अभिनंदन प्रकट किया।

इस मौके प्रि. अनिल हांडा, एल.एस.डी. स्कूल बस्सी दौलत खां, प्रि. सोनिया संधीर एस.डी. स्कूल शामचौरासी, प्रि. पूनम चावला, डा. राजीव पराशर, राकेश जरियाल सहित कई अन्य स्कूलों के अध्यापक उपस्थित थे।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तर्गत स्कूलों की विभिन्न मुद्दों को लेकर बैठक आयोजित

स्कूलों के बजट हुए पास

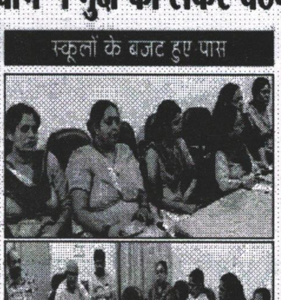

हरियाना, (मुकेरियां टाईम्स): उत्तरी भारत की प्रसिद्ध श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के अध्यक्ष व पूर्व विधायक डा. शिव कुमार शर्मा के दिशा निर्देशानुसार सभा के महासचिव डा. देश बंधु की अध्यक्षता में जी. जी. डी. एस. डी. कालेज हरियाना में सभा के विभिन्न स्कूलों की वार्षिक बैठक का आयोजन हुआ जिसमें विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई। कालेज प्रिंसीपल व सभा के आर्गेनाईजर सचिव डा. गुरदीप शर्मा व समूह स्टाफ ने उनके कालेज पहुंचने पर हार्दिक अभिनन्दन किया। बैठक में विभिन्न स्कूलों के किए गए निरीक्षण उपरांत स्कूलों के वार्षिक बजट, अध्यापकों के परीक्षा परिणामों, शिक्षा में और अधिक गुणवत्ता लाने तथा भविष्य की योजनाओं की पेश की गई प्रगति रिपोर्ट पर चर्चा करते हुए संतुष्टी का इजहार किया तथा प्रिंसीपलों को स्कूलों की कारगुजारी में और अधिक व्यापक स्तर पर और अधिक गुणात्मक सुधार लाने के कई निर्देश दिए गए। डा. शर्मा ने क्रमवार प्रिंसीपलों की ओर से स्कूलों के पेश किए गए वार्षिक बजट को स्वीकृति प्रदान करने के साथ साथ पेश की गई प्रगति रिपोर्ट पर संतुष्टी का इजहार किया। उन्होंने सभा की ओर से संचालित किए जा रहे माडल व मान्यता प्राप्त स्कूलों में शिक्षा के आधुनिकीकरण एवं व्यापक स्तर पर गुणात्मक सुधार लाने पर बल दिया। इससे पूर्व महासचिव प्रिं.डा. देश बंधु शर्मा ने फिरोज़ सहित कई अन्य स्कूलों का निरीक्षण भी किया। सभा के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा ने अपने संदेश में कहा कि शिक्षा के साथ साथ विद्यार्थियों में सचरित्र, नैतिकता एवं सुसंस्कारित गुणों का भी समावेश करना हमारी प्राथमिकता है। इस अवसर पर प्रो. डा. राजीव शर्मा, दिवान चमन लाल कत्याल एस. डी. स्कूल की प्रभारी पूनम चावला, एस. डी. पब्लिक सीनियर सैकेंडरी स्कूल हरियाना की प्रभारी मैडम शुचि शर्मा, प्रि. सोनिया संधीर एस. डी. स्कूल तथा पंडित अमर नाथ एस. डी. पब्लिक स्कूल शामचौरासी, बसी दौलत खां स्कूल के प्रि. अनिल हांडा, जालंधर के एस. डी. स्कूल फुगरवान की प्रि. नीरज सैनी, प्रि.सीमा वासुदेवा एस. डी. स्कूल गुरदासपुर, नीलम शर्मा, रजनी, पवनदीप आदि उपस्थित थे।

डॉ. नन्द किशोर शर्मा, प्रधान संपादक
10, अशोक विहार, महेश नगर
अम्बाला छावनी – 133001
मो. 9896589890, 8708534636

डॉ. देशबन्धु,
1117, प्रभु प्रेमपुरम, जगाधरी रोड़,
अम्बाला छावनी – 133001
मो. 9812053283

सदस्यता सहयोग प्रपत्र

मैं/हमारी संस्था ....

स्थायी पता ....

....

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी.) द्वारा प्रकाशित की जा रही "सनातन संवर्धिनी" नामक अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए 100/– रू. (एक सौ रुपये केवल) की सहयोग राशि प्रतिवर्ष प्रदान करने का संकल्प लेता हूँ/लेती हूँ।

मैं/हमारी संस्था यह राशि नकद/चैक/ड्राफ्ट द्वारा श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति (पंजी.) के नाम प्रेषित कर रहा हूँ/रही है।

हस्ताक्षर ....

नाम ....

पद ....

<u>गौशाला हेतु दान संकल्प</u>

मैं ....

स्थायी पता ....

....

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी.) द्वारा सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में संचालित गौशाला के लिए रुपये .... (शब्दों में) .... की दानराशि प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेता हूँ/लेती हूँ। मैं यह राशि सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार के नाम नकद/चैक/ड्राफ्ट द्वारा प्रदान कर रहा हूँ/रही हूँ।

हस्ताक्षर

माता मन्दिर ओखला, नई दिल्ली
प्राण-प्रतिष्ठा एवं मूर्ति-स्थापना समारोह की झलकियाँ

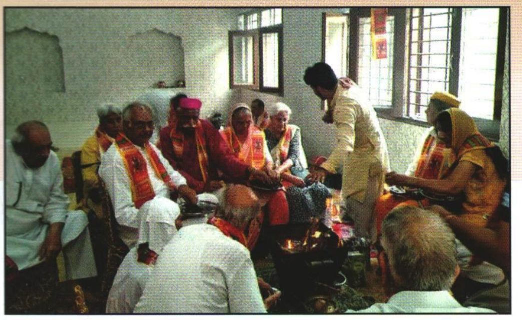

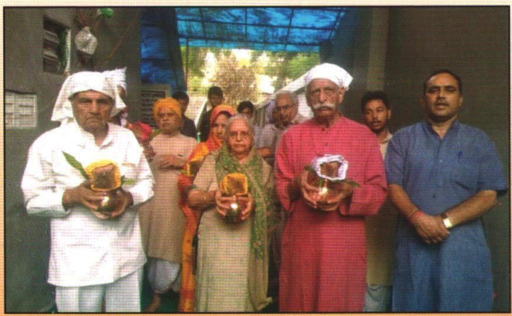
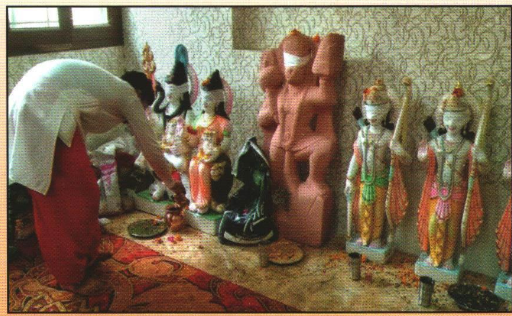

दिनांक 10 जून, 2019 को सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार में गोस्वामी गणेशदत्त जी महाराज की पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित विविध धार्मिक अनुष्ठान

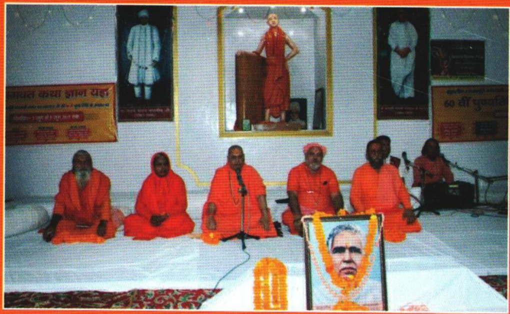

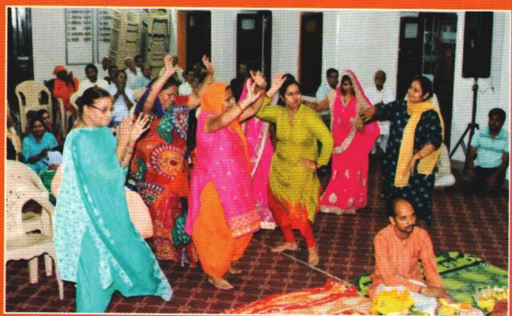

D&P Daksh Associates +91-9416174386